प्रथम अध्याय

अनन्त गोपाल शेवड़े : व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व

१.१. प्रस्तावना –

अच्छे साहित्य की निर्मिति के लिए उसके निर्माता के व्यक्तित्व का महान होना आवश्यक होता है, क्योंकि किसी भी साहित्यकार को साहित्य-सृजन के लिए उसके व्यक्तित्व से ही प्रेरणा मिलती है। अतः कृति के मूल्यांकन से पहले उसके रचयिता के व्यक्तित्व के अध्ययन की समीचीनता स्वयंसिद्ध है। इसी कारण ही गांधीवाद के परिप्रेक्ष्य में शेवड़े जी के 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यासों का अनुशीलन करने से पहले उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन करना आवश्यक लगता है।

१.२. अनन्त गोपाल शेवड़े : व्यक्तित्व –

स्वर्गीय अनन्त गोपाल शेवड़े हिन्दी के एक जाने-माने साहित्यकार हैं। आप उपन्यासकार, कहानीकार, निबन्धकार तथा एक निर्भीक पत्रकार के रूप में हिन्दी जगत् में विख्यात हैं। आपके अब तक ग्यारह उपन्यास, तीन कहानी-संग्रह, दो ललित निबन्धों के संग्रह तथा एक यात्रा-वर्णन संग्रह हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा अंग्रेजी में भी आपके कई उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। अंग्रेजी भाषा पर भी आपका हिन्दी का-सा ही प्रभुत्त्व था। स्वयं हिन्दीतर भाषी होते हुए भी तथा अंग्रेजी भाषा पर प्रभुत्त्व होते हुए भी आपने हिन्दी में साहित्य-सृजन किया है, यह आपकी एक अलग पहचान हैं। एक सामान्य मध्यवित्त ब्राह्मण परिवार में जन्में शेवड़े जी ने हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार-कार्य में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। उनके व्यक्तित्व पर महात्मा गांधी जी का जबर्दस्त प्रभाव था। उनका जीवन अंधेरे से प्रकाश की ओर यात्रा है। उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को देखने के उपरान्त यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है।

१.२.१. जन्म तथा जन्मस्थान –

अनन्त गोपाल शेवड़े जी का जन्म ८ सितम्बर १९११ को मध्यप्रदेश के छिन्दवाडा जिले में स्थित सौंसर नामक तहसील के गांव में हुआ था, जहां उनके पिताजी उन दिनों नायब तहसीलदार थे। पिताजी की सरकारी नौकरी होने के कारण उनके हर वक्त तबादले होते रहते थे। इसी सिलसिले में जब वे सपरिवार सौंसर आये थे, तब वहीं शेवड़े जी का जन्म हुआ था। शेवड़े जी अपने माता-पिता की तीसरी सन्तान हैं। सितम्बर में गणेश के आगमन की धूम होती है। ऐसे समय पुत्र-प्राप्ति साक्षात् गणेश-कृपा ही मानी गयी और उसका

नामाभिधान 'अनन्त' हो गया। यही अनन्त बड़ा होकर अनन्त गोपाल शेवड़े के रूप में हिन्दी का ख्यातकीर्त साहित्यकार एवं ज्येष्ठ प्रचारक बना।

सौंसर गांव हिन्दी-भाषी मध्य प्रदेश तथा मराठी-भाषी महाराष्ट्र की सीमा पर बसा है। यह गांव महाराष्ट्र में रहे या मध्य प्रदेश में, इसे लेकर एक हल्का-सा आन्दोलन भी चला था। पर शेवड़े जी इसे सीमा (सरहद) का स्थान नहीं मानते, तो संगम का स्थान मानते हैं, जहां हिन्दी और मराठी की धाराएँ आ कर मिलती हैं। एक स्थान पर शेवड़े जी ने कहा था -

> "ऐसे संगम-स्थान पर, जहां हिन्दी और मराठी भाषाओं के प्रवाह आ कर मिलते हैं, मेरा जन्म हुआ। इस घटना का मैं यही अर्थ लगाता हूँ कि विधाता का मुझे यही आदेश है कि तू हिन्दी और मराठी भाषाओं के बीच ही नहीं, भारत की समस्त भाषा-भगिनियों के बीच स्नेह और आदर का सेतु बन जा, ताकि इस विशाल, गौरवशाली देश की समस्त भाषाओं के साहित्यकार एवं बोलने वाले एक-दूसरे से गले मिलने के लिए उस पुल पर से गुजरें और उनकी चरण-रज से तेरा जीवन धन्य हो जाए।" १

इस कथन से अपनी जन्मभूमि के प्रति होने वाली शेवड़े जी की अपार निष्ठा तथा उनकी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

१.२.२. माता-पिता -

शेवड़े जी के पिता का नाम गोपाल लक्ष्मण शेवड़े था। वह नायब तहसीलदार का पदभार सँभालते थे। खण्डवा, होशंगाबाद, छिन्दवाड़ा जैसे जिलों में उन्होंने नायब तहसीलदार के रूप में कार्य किया था। वह सरकारी नौकरी करते जरूर थे, पर बड़े राष्ट्रवादी भी थे। हिन्दी के सुविख्यात कवि पं. माखनलाल चतुर्वेदी के राष्ट्रवाद से वे प्रभावित थे। उनकी मृत्यु सन १९२८ में, दिल का दौरा पड़ जाने से हुई। तब शेवड़े जी खण्डवा में थे।

शेवड़े जी की माता का नाम रमाबाई था। वह धर्मपरायण भारतीय नारी थी। ब्राह्मण परिवार के संस्कारों में पलने के कारण वह नित्य पूजा-पाठ करती थी। राम, कृष्ण, विष्णु, लक्ष्मी उनके आराध्य देवता थे। गोद में सात सन्तानों का बोझ होकर भी वह जीवन भर

सन्तुष्ट रही। उनके चार बेटे तथा तीन बेटियां थी। पति की अकाल मृत्यु से उनका पूरा जीवन संघर्षों से जूझते हुए गुजरा। पति की सहायता के बिना सात सन्तानो की गृहस्थीका बोझ उठाना जोखिम से कम न था। फिर भी उन्होने बड़े धैर्य से काम लिया।

रमाबाई वैसे निपट अनपढ़ तो नहीं थी। उन्होंने तीन-चार वर्षों तक की स्कूली शिक्षा हासिल की थी। कम उम्र में ही उनकी शादी हुई थी। समाज और राजनीति की गतिविधियों में वह रूचि रखती थी। जिस श्रध्दा से वह तुलसी का रामायण पढ़ती, उसी श्रध्दा से अखबार पढ़ना भी नहीं भूलती थी। राजनीति के बारे में उनका अपना स्पष्ट दृष्टिकोण था। महात्मा गांधी जी उनके लिए देवता से कम नहीं थे। गांधी जी की तसबीर का देवालय में होना यही सिद्ध करता है। जवाहरलाल नेहरू को वह अपना पाँचवा बेटा मानती थी। वह एक राष्ट्रवादी नारी थी। चरखा चलाना उनके जीवन-क्रम का अभिन्न अंग था। शेवड़े जी के गांधीवादी होने का रहस्य इन्हीं बातों में देखा जा सकता है।

श्रीमती रमाबाई शेवड़े ने अपनी सन्तानों की शिक्षा-दीक्षा का बराबर खयाल रखा था। बच्चों को पढ़ाकर स्वावलंबी बनाने में उनका विश्वास था। जीवन में आने वाली हर विपत्ति के समय वह ईश्वर पर भरोसा रखती थी। उनकी मृत्यु ४ दिसम्बर १९५१ में, दिल का दौरा पड़ जाने से हुई। उस समय शेवड़े जी की उम्र ४८ वर्ष की थी। इस उम्र में भी शेवड़े जी माँ के वियोग से फूट-फूट कर रोये थे।

अनन्त जी बड़े ही मातृभक्त थे। अपनी सफल जीवन-यात्रा का श्रेय वह अपनी माताजी को ही देते हैं। यह सच भी था, क्योंकि अपने जीवन में उन्होंने अपनी माताजी से अनेक अच्छे संस्कार पाये थे। पं. हृषिकेश शर्मा जी ने इस सम्बन्ध में ठीक ही लिखा है-

> "हिन्दी, गांधी और राष्ट्रीयता का संस्कार शेवड़े जी को उनकी माताजी से ही मिला, मानो ये चीजें उन्हें घुट्टी में ही पिला दी गई हो।" २

शेवड़े जी के व्यक्तित्व पर उनकी माता जी की अमिट छाप थी, जिसकी छाया हमें 'निशागीत' तथा 'ज्वालामुखी' जैसे उपन्यासों में यत्र-तत्र बिखरी हुई स्पष्ट दिखाई देती है।

१.२.३. बचपन एवं शिक्षा-दीक्षा -

शेवड़े जी का बचपन सुख में बीता। उनके घर नौकर-चाकर भी थे। एक मध्यवित्त

परिवार में पायी जाने वाली सारी सुविधायें शेवड़े जी को मिलती थी।

शेवड़े जी के पिताजी का तबादला प्रायः हिन्दी प्रदेशों में ही होता रहता था। अतः मराठी मातृभाषा होकर भी शेवड़े जी को प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी में लेनी पड़ी। छिन्दवाडा, होशंगाबाद तथा खण्डवा के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में शेवड़े जी ने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। मिडिल स्कूल में आकर संस्कृत में उनका अध्ययन जारी हुआ। इन्हीं दिनों एक मेधावी बुद्धि के छात्र की हैसियत से विज्ञान को भी उन्होंने अपने अध्ययन का विषय बनाया । अब हिन्दी की पढ़ाई शिथिल हुई। सन् १९२८ में उनकी मॅट्रिक की परीक्षा प्रारम्भ हो गयी थी, तब अकस्मात उनके पिता जी का देहान्त हुआ। उस समय शेवड़े जी ने अपनी परीक्षा रोते-रोते ही दी। फिर भी उस परीक्षा में सर्वप्रथम आने के कारण उन्हें 'एच्. मित्रा स्वर्णपदक' प्राप्त हुआ था।

पिताजी की मृत्यु के उपरान्त शेवड़े जी की माता रमाबाई अपने सात बच्चों को लेकर नागपुर रहने आयी। महाविद्यालयीन शिक्षा के लिए शेवड़े जी ने नागपुर के मॉरिस कॉलेज को चुना। उन्होंने जब कॉलेज में प्रवेश लिया, तब महात्मा गांधी का आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। सब ओर गांधी की आँधी फैल गयी थी। सत्याग्रह, जुलूस, प्रभात फेरी से सारा देश गूंज रहा था। इन्हीं दिनों शेवड़े जी ने गांधी जी के विचार पढ़ना प्रारम्भ किया था। माता रमाबाई भी उन्हें गांधी जी के बारे में बताती रहती थी। परिवेश में आन्दोलन की हवा गर्म थी। ऐसी स्थिति में शेवड़े जी जैसा नव युवक हाथ बाँधे कैसे रह सकता था? उन पर भी स्वतंत्रता, देशसेवा, स्वदेशी व्रत जैसी बातों की धुन सवार हो गयी। लाठी, गोली, जेल-यात्रा जैसी बातें उन्हें चुनौती लग रही थी। शेवड़े जी धीरे-धीरे राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय होते गये। कार्यकर्ता-शिविरों में जाना, भाषण सुनना तथा जुलूस में भर्ती होना अब दिन-क्रम-सा बन गया था। शेवड़े जी जब कॉलेज के तीसरे वर्ष में थे, तब गांधी जी के आवाहन को स्वीकार कर उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया और अपनी चचेरी बहन यमुताई ठाकुर के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में शरीक हुए। आन्दोलन के सिलसिले में ही शेवड़े जी की भेंट यमुना जी से हुई, जो आगे चल कर उनकी जीवन-संगिनी बनी।

स्वतंत्रता-संग्राम का एक नया अनुभव अपने जीवन में जोड़कर शेवड़े जी ने फिर से कॉलेज में प्रवेश लिया तथा अंग्रेजी और फिलासफी विषयों में बी. ए. की परीक्षा पास की।

शेवड़े जी का अंग्रेजी पर हिन्दी का-सा ही प्रभुत्त्व था। बी.ए. के उपरान्त उन्होंने सन् १९३५ में नागपुर विश्वविद्यालय से एम्.ए. की उपाधि उच्च श्रेणी में ग्रहण की। विश्वविद्यालय में वे छात्र-संघ के सक्रिय कार्यकर्ता थे। उन देनों विश्वविद्यालय की हिन्दी समिति के कार्याध्यक्ष का पदभार उन्होंने सँभाला था।

१.२.४ पत्रकारिता-

नागपुर विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम्. ए. पास करने के उपरान्त प्रोफेसरी तथा सरकारी नौकरियों को ठुकरा कर शेवड़े जी ने अपने ज्येष्ठ बन्धु के सहयोग से 'इंडिपेंडेंट' (Independent) नामक एक प्रखर तेजस्वी राष्ट्रीय अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन १५ अगस्त १९३५ में प्रारम्भ किया। उन्होंने सरकारी नौकरी ठुकरा कर जीविका के लिए पत्रकारिता का व्यवसाय चुना। इसके कई कारण थे। शेवड़े जी आजादी चाहते थे - अपनी, अपने देश की, दिल की और अपनी कलम की। वह चाहते थे कि महात्मा गांधी जी की आत्मा की पुकार, उनका पावन सन्देश जन-जन तक पहुँच जाए। उस समय नागपुर शहर से जो अखबार निकलते थे, वे अंग्रेजों की सराहना से बाज नहीं आते थे। एक राष्ट्रीय समाचार-पत्र होने की आवश्यकता थी, जो 'इंडिपेंडेंट' द्वारा शेवड़े-बन्धुओं ने पूरी की।

'इंडिपेंडेंट' (सब प्रकार की मर्यादाओं से मुक्त, निरंकुश आजादी या स्वच्छंदता) स्वतंत्र विचार का एक निर्भीक साप्ताहिक पत्र था। उसकी राष्ट्रवादी नीति से सब परिचित थे। इस साप्ताहिक में नित्य प्रतिदिन अंग्रेजों की कड़ी आलोचना होती रहती थी। ऐसे पत्रों पर अंग्रेजों की कड़ी नजर रहती थी। देश भर में प्रेस ॲक्ट जारी था। शेवड़े जी की आर्थिक परिस्थिति भी उतनी अच्छी नहीं थी। ऐसी विपरीत स्थिति में किसी ध्येय से प्रेरित अखबार प्रकाशित करना हँसी खेल नहीं था। 'इंडिपेंडेंट' का प्रकाशन बन्द कराने के हेतु सरकार ने उस पर दो हजार रूपयों की जमानत माँगी थी। शेवड़े जी ने घर की चीज-वस्तुओं को बेच कर तथा जमनालाल बजाज आदि से रूपये उधार ला कर जमानत भर दी और पत्र का प्रकाशन जारी रखा।

शेवड़े जी का पत्रकारिता का चयन एक स्वेच्छा का कार्य था। उसे वे देशसेवा और जन-जागृति का साधन मानते थे। अतः ऐसे काम करते समय उन्होंने कभी शर्म महसूस नहीं की। प्रकाश के लिए अन्धेरे में से मार्ग निकालने की आवश्यकता माननेवाले शेवड़े जी

इसे जीवन का आवश्यक अंग मानते थे। 'इंडिपेंडेंट' का प्रकाशन जारी रखने में कितनी ही विपत्तियाँ सामने आयी, पर उन सारी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी पत्र चलाने में शेवड़े बन्धुओं ने अपनी निष्ठा का परिचय दिया। सन् १९४२ के आन्दोलन के समय शेवड़े जी की गिरफ्तारी के कारण उसका प्रकाशन कुछ काल के लिए बन्द हो गया था, पर बाद में वह पूर्ववत् प्रकाशित होता रहा। सन् १९४४ में प्रेस में अचानक आग लगी थी, पर लोगों की हार्दिक सहायता के कारण प्रेस बचा।

सन् १९४७ में, शेवड़े जी ने अपने मित्रों की सहायता से 'नवसमाज संस्था' की स्थापना की। इसका उद्देश्य दैनिक पत्र चलाना था। 'इंडिपेंडेंट' का प्रकाशन अभयंकर स्मारक ट्रस्ट की तहत होता था। ट्रस्ट की आर्थिक स्थिति कमजोर होते देख कर शेवड़े जी ने प्रेस ट्रस्ट को दान कर दी। इससे ट्रस्ट सँवर गया, साथ ही 'नागपुर टाईम्स' नामक अंग्रेजी दैनिक के प्रकाशन के लिए शेवड़े जी को अवकाश मिल गया। इस प्रकार 'इंडिपेंडेंट' का दैनिक 'नागपुर टाईम्स' में विलीनीकरण किया गया। 'नागपुर टाईम्स' का संचालन लिमिटेड कम्पनी से होता था। कम्पनी का पूरा कारोबार सहकारी पद्धति से चलता था। गांधी जी ने जिस 'ट्रस्टीशिप' की हिमायत की थी, उसे प्रत्यक्ष में लाते हुए शेवड़े जी ने लोकतांत्रिक कार्य-पद्धति का अवलम्ब किया। अपनी कार्य-पद्धति से उन्होंने सभी कर्मचारियों में यह विश्वास जगाया कि संस्था मेरी है, संस्था का विकास मेरा ही विकास है। इससे लाभ यह हुआ कि सभी कर्मचारी बड़ी निष्ठा एवं लगन से काम करते रहे और थोड़े ही दिनों में 'नागपुर टाईम्स' नागपुर-विदर्भ का मुखपत्र बना।

संस्था के प्रमुख संस्थापक एवं आधारस्तंभ होते हुये भी शेवड़े जी ने निजी हितों का त्याग कर दिया था, जो गांधी जी के न्यासी-तत्त्व के सर्वथा अनुकूल था। शेवड़े जी ने अपने वेतन के अलावा संस्था की एक पाई भी अपने लिए खर्च नहीं की। यह विचार सम्भवतः उन्होंने गांधी जी से ही पाया था।

'इंडिपेंडेंट' की तरह 'नागपुर टाईम्स' के प्रकाशन में बाधा डालने के हेतु अनेक राजनीतिज्ञों ने शेवड़े पर अनेक इल्जाम लगा कर मुकदमें दायर किये। पर शेवड़े जी टस से मस नहीं हुए। मुकदमों में मानसिक परेशानी जरूर हुई, पर अदालत ने उन्हें बरी कर दिया। इस संघर्ष का यथार्थ चित्रण शेवड़े जी ने 'भग्नमन्दिर' उपन्यास में किया है। अदालत

से फुर्सत पाते ही उन्होंने फिर संगठनादि कार्य शुरू किया। इस बीच 'नागपुर टाईम्स' के तत्त्वावधान में 'नागपुर पत्रिका' नामक मराठी दैनिक का प्रकाशन करने की योजना बनी। यह पत्रिका भी थोडे ही दिनों में जम गई।

पत्रकार के रूप में शेवड़े जी ने अनेक समितियों के पदभार सँभाले। 'महाराष्ट्र राज्य प्रेस सलाहकार समिति' के वे अध्यक्ष थे। 'इण्डियन ॲण्ड ईस्टर्न न्यूज पेपर सोसायटी' में उन्होंने उपाध्यक्ष का पदभार सँभाला था। 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया' के निदेशक के रूप में उनका कार्य सराहनीय रहा। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण विभाग की 'हिन्दी समिति' तथा 'प्रेस परिषद' के भी शेवड़े जी सदस्य थे। नागपुर विश्वविद्यालय के 'पत्रकारिता' विभाग के अध्ययन मण्डल पर भी वे सदस्य रह चुके थे। पत्रकारिता के इस पहलू से शेवड़े जी का समग्र व्यक्तित्व अत्यधिक उजागर हुआ था।

१.२.५. विवाह तथा पारिवारिक जीवन –

शेवड़े जी का विवाह यमुना जी से सन् १९३९ में हुआ। यमुना जी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के भाई चिन्तामणराव ताम्बे की पौत्री थी। उनका बचपन सुख में बीता था। चाचा बड़े ओहदेदार होने के कारण तथा घर की ऐतिहासिक परम्परा होने से गांव में उनके परिवार का बड़ा रोबदाब था। घर में राष्ट्रवादी वातावरण रहने से उन्में देशभक्ति की भावना अपने आप जागी थी। घर के साथ ही सागर के महिला विद्यालय का वातावरण भी राष्ट्रवादी था, जहाँ यमुना जी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी की। विद्यालय की ओर से आयोजित शिविरों में यमुना जी उत्साह से भाग लेती थी।

इधर शेवड़े जी ने भी गांधी जी के आवाहन को स्वीकार कर कॉलेज छोड़ दिया था तथा स्वतंत्रता-आन्दोलन में शरीक हुए थे। शिविरार्थियों को एकत्र करना, उन्हें गीत सिखाना आदि की जिम्मेदारी शेवड़े जी सँभालते थे। ऐसे ही एक शिविर में शेवड़े जी का यमुना जी से परिचय हुआ था। होने वाली पत्नी की यह पहली भेंट थी। ये दो उस काल की बंदर-सेना में आगे रहा करते थे। प्रचार करना, प्रभात फेरियों और जुलूसों के लिए लडकियाँ एकत्रित करना, गीत गाना और सिखाना आदि काम यमुना जी करती थी, तो सभाओं में भाषण देना, कार्यक्रम निश्चित करना और योजनाएँ बनाने की जिम्मेदारियाँ शेवड़े जी उठाते थे। इस प्रकार आन्दोलनों का नेतृत्व शेवड़े जी करते थे और किशोरी यमुना उनका साथ देती थी।

आगे उनके व्यक्तिगत जीवन-संग्राम में भी यमुना जी ने शेवड़े का साथ दिया। शेवड़े जी लिखते हैं-

> "स्वतंत्रता-संग्राम में हिस्सा लेने के कारण मेरे दो फायदे हुए। एक तो देश स्वतंत्र हुआ और दूसरे मुझे अनुरूप, सुयोग्य पत्नी मिली।"३

सुखी पारिवारिक जीवन के लिए पति-पत्नी का एक-दूसरे के लिए समर्पित होना जरूरी होता है। यमुना जी जैसे उत्तरदायी जीवन-साथी के सहयोग से शेवड़े जी ने जीवन के अनेक संघर्षों का सामना किया। प्रत्येक सफल पुरूष के पीछे एक स्त्री की प्रेरणा रहती है। शेवड़े जी के बारे में भी यही हुआ था। माता जी के उपरान्त यमुना जी ही उनका सहारा थी। जीवन के हर सुख-दुःख में शरीक होकर उन्होंने अपने आपको अर्धांगिणी सिद्ध किया। गहनों के मोह से वह कोसों दूर थी। यमुना जी पर गांधीवाद में निहित सादगी का प्रभाव था। शेवड़े-दम्पति कम-से-कम आवश्यकताओं में जीने में विश्वास करती थी। सादे जीवन और ऊँचे चिन्तन ('सिम्पल लिवींग अँड हाय थींकिंग') के तत्त्व में उनका विश्वास था। यह प्रेरणा उन्हें गांधी जी से प्राप्त हुयी थी। शेवडे-दम्पति के चिन्तन की उच्चता तथा उदात्तता उनके साहित्य से भली-भाँति स्पष्ट होती है। स्वयं यमुना जी मराठी की सुविख्यात कथाकार हैं। आपका लिखा उपन्यास 'जीवन संगीत' मराठी साहित्य में बहुचर्चित रहा है।

कुल मिला कर शेवड़े जी के परिवार को सुखी परिवार की संज्ञा दी जा सकती है। छोटा परिवार हमेशा सुखी रहता है। उनके दो बेटियाँ हैं - साधना और अंजली। शेवड़े जी आदर्श पति के साथ-साथ एक वत्सल पिता भी थे। साधना जी ने अपने पिता का वर्णन 'वज्रादपि कठोर और कुसुमादपि मृदु' जैसे शब्दों में किया है। ४ शेवड़े जी एक मातृ-हृदय के पिता थे। उनका समूचा जीवन संघर्ष के दौर से गुजरा। वे अपने जीवन-सिद्धान्तों की लड़ाई खुद लड़ते रहे। उन्होंने घर वालों को इस लड़ाई से अछूत ही रखा था।

१.२.६. जेलयात्रा -

शेवड़े जी सन् १९३० से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हुए थे। आजादी के लिए कॉलेज का बहिष्कार कर तथा आगे विभिन्न राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेकर उन्होंने अपनी राष्ट्र-निष्ठा को सिद्ध किया था। सन् १९४२ में जब गांधी जी द्वारा 'भारत छोड़ो'

आन्दोलन छेड़ा गया, तब शेवड़े जी नागपुर के अग्रणी नेता बने थे। वे महाराष्ट्र की कॉंग्रेस समिति पर काम करते थे। इस कारण पुलिस उनके पीछे थी। ऐसे ही एक दिन शेवड़े जी गिरफ्तार हुये। शासन के विरूद्ध गतिविधियों में हिस्सा लेने के अपराध में पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया तथा अनिश्चित काल के लिए जेल भेज दिया।

सन् १९४२ से १९४५ तक के तीन वर्ष शेवड़े जी जेल में रहे। राजबन्दी होने के कारण किताबें तथा लेखनादि सामग्री पर पाबन्दी लगाई गयी थी। पर बाद में यह पाबन्दी हटाई गयी। अब उन्हें पुस्तकें तथा लेखन-सामग्री मिलने लगी। इसका उन्होंने बहुत लाभ उठाया। इस काल में उन्होंने तालस्ताय, रोम्यां रोला, स्टिफन, एमिल जोला, इब्सेन, खलील जिब्रान, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विवेकानन्द जैसे साहित्यकार, नाटककार, दार्शनिक तथा धर्मोपदेशकों का समग्र साहित्य पढ़ा।

इस काल में उन्होंने जो कुछ पढ़ा, उससे उनकी सूझ-बूझ बढ़ी। इससे पहले ही वे यह सब पढ़ना चाहते थे, पर फुर्सत के अभाव में नहीं पढ़ सके थे। जेल-जीवन को उन्होंने फुर्सत के रूप में स्वीकार किया और अपने साहित्यकार, पत्रकार तथा चिन्तक को परिष्कृत किया। जब वे पठन-पाठन से ऊब जाते, तब लिखते रहते थे। 'डायरी के पन्ने', 'तीन कंकड' जैसी मशहूर कहानियाँ, ' तीसरी भूख ', 'जीवन की किताब', 'अपना-अपना चश्मा' आदि निबन्ध तथा ' पूर्णिमा', 'मृगजल', 'निशागीत' आदि बहुचर्चित उपन्यास जेल-जीवन का ही उपहार हैं। जेल में राजनीतिक लेखन जब्त होने का डर बना रहता था। इस कारण शेवड़े जी ने इस काल में सामाजिक विषयों पर ही लेखन किया।

सन् १९४५ में, अन्य अनेक राजबन्दियों के साथ शेवड़े जी को जेल से रिहा कर दिया। शेवडे जी अपने जेल-जीवन को वरदान मानते हैं-

> "जेल को मैंने वरदान माना है और वहाँ के अनुभवों और सम्पर्कों को जीवन की अमूल्य निधि ।" ५

जेल में उन्हें अवमान के साथ पीड़ाएँ भी सहनी पडी थीं, पर आजादी के सपनों को पूरा होते देख कर उनकी सारी पीड़ाएं दूर हो जाती थीं।

१.२.७. संगठन-कार्य -

शेवड़े जी की संगठन-कुशलता अनुकरणीय थी। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पूर्व राष्ट्रीय

आन्दोलन में एक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने अनुशासन के पाठ पढ़े थे। सन् १९३३-३४ के दौरान शेवड़े जी ने नागपुर विश्वविद्यालय की ओर से गांधी-जयंति का आयोजन किया था। उस समय शेवड़े जी विश्वविद्यालय की 'हिन्दी साहित्य-समिति' के कार्यकारी अध्यक्ष थे। समारोह के अध्यक्ष भी स्वयं शेवड़े जी ही थे। उनकी व्यापक योजना-कुशलता देख कर समारोह के लिये उपस्थित पं. हृषिकेश शर्मा जी के मन में सहसा यह विचार आया था -

"आज विद्यार्थी-जीवन में जिसकी इतनी सूझ-बूझ है, वह व्यक्ति आगे कितनी दूर जायेगा, इस का अन्दाजा लगाना कठिण है। " ६

इस प्रकार गांधी-जयंति समारोह, विभिन्न शिविरों का आयोजन तथा संयोजन, काँग्रेस समिति में कार्य, भूमिगत आन्दोलन तथा पत्रकार की हैसियत से किया गया समन्वय-कार्य आदि से उनके संगठक-व्यक्तित्व का निर्माण हुआ था।

शेवड़े जी के इस संगठक-व्यक्तित्व में पूरा निखार तब आया, जब उनके नेतृत्व में जनवरी १९७५ में, नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन सम्पन्न हुआ था। विश्व हिन्दी सम्मेलन की कल्पना उन्हीं की थी और सम्मेलन के महासचिव के रूप में उन्होंने उसे साकार भी किया था। नागपुर के इस सम्मेलन के उपरान्त सन् १९७६ में, मारीशस में आयोजित द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की कल्पना भी शेवड़े जी की ही थी। इस सम्मेलन के आयोजन में भी उन्होंने जनरल सेक्रेटरी के रूप में अविस्मरणीय योगदान दिया था। ९

विश्व हिन्दी सम्मेलन की इस मजबूत एवं समृद्ध परम्परा के जनक शेवड़े जी की संगठन-कुशलता की महानता इसी में है कि उनके चल बसने के बाद भी उनकी बनी बनायी परम्परा दिनों दिन विकसित एवं समृद्ध होती जा रही है।

१.२.८. हिन्दी के प्रति आदर-भावना -

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति शेवड़े जी का प्रेम एवं समर्पण विश्वविख्यात है। अंग्रेजी भाषा में प्रभुत्त्व होते हुए भी तथा मातृभाषा मराठी होते हुए भी हिन्दी में लिखने का उनका कार्य निस्संदेह प्रशंसनीय है। हिन्दी के प्रति उनका यह लगाव उनके व्यक्तित्व का अभिन्न पहलू है। वह हिन्दी भाषा को भारतीयता में एकता निर्मित करने का सब से बड़ा साधन मानते थे। हिन्दी को 'विश्वभाषा' की संज्ञा प्रदान करना उनका लक्ष्य था। शेवड़े जी का विश्वास था कि 'एक दिन ऐसा आएगा, जब हिन्दी केवल भारत की राष्ट्रभाषा और राजभाषा ही नहीं

रहेगी, बल्कि विश्व की प्रमुख भाषाओं में उसकी गणना होगी।' सन् १९६६ में शेवड़े जी ने यह जो भविष्यवाणी की थी, उसे आज हम सत्य होते देख रहे हैं। सचमुच आज हिन्दी 'विश्वभाषा' बन चुकी है। इसके पीछे शेवड़े जी का योगदान अविस्मरणीय है। राष्ट्रभाषा हिन्दी को विश्व-मंच पर विराजमान कराने का श्रेय उन्हीं को दिया जाना चाहिए। प्रथम तथा द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन में उनका सहभाग सर्वविदित है।

वैसे तो, प्राथमिक शिक्षा के बाद शेवड़े जी ने हिन्दी को पाठ्यक्रम का विषय बना कर कभी नहीं पढ़ा। भला जीवन भी कोई पाठ्यक्रम का विषय है ? उनके पिताजी सरकारी नौकर थे और नौकरी के सिलसिले में उनके तबादले हमेशा हिन्दी-भाषी स्थानों में ही होते रहते थे। परिणामस्वरूप हिन्दी भाषा बचपन में ही शेवड़े जी की घुटी में पड़ गई और इसी कारण जाने-अनजाने उनका रूझान हिन्दी की ओर बढ़ता गया। कुछ कालोपरान्त हिन्दी उनका जीवन बन गई। जो कुछ भी हिन्दी उन्होंने सीखी थी, वह जन-जीवन के प्रत्यक्ष सम्पर्क से तथा हिन्दी की आत्मा के साथ तादात्म्य एवं समरसता स्थापित करके ही सीखी थी। प्रेमचन्द जी के उपन्यासों तथा हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का वाचन करके ही वे अपनी भाषा में निखार लाते थे।

शेवड़े जी के इस हिन्दी-प्रेम के मूल में गांधी जी की प्रेरणा काम कर रही थी। सन १९३३-३४ के दौरान नागपुर विश्वविद्यालय में जब उन्होंने गांधी-जयंति का समारोह आयोजित किया था, तब गांधी जी का लिखा एक पत्र उन्हें प्राप्त हुआ था। उसमें गांधी जी ने लिखा था -

"भाई अनन्त गोपाल शेवड़े,

कैसा अच्छा हो यदि आप के प्रयत्नों से हिन्दी का घर-घर में प्रचार हो जाए ?

आपका,

मो. क. गांधी, वर्धा। "७

इस छोटे-से पत्र से प्रेरणा पाकर उन्होंने हिन्दी के प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया था। गांधी जी का संदेश ही मानो शेवड़े जी के लिए एक आदेश बन गया था। उनका सारा जीवन हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में बीता। शेवड़े जी ने हिन्दी साहित्य में ग्यारह उपन्यास, तीन कहानी-संग्रह, दो निबन्ध-संग्रह तथा एक यात्रा-वर्णन-संग्रह का

योगदान दिया है। उनकी इन मूल्यवान एवं महती हिन्दी-सेवाओं के लिए उन्हें 'अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की ओर से सन् १९६०-६१ का 'महात्मा गांधी पुरस्कार' प्रदान किया गया था।

१.२.१. गांधीजी के प्रति श्रद्धा-भाव -

केवल शेवड़े जी ही नहीं, उनका सम्पूर्ण परिवार गांधी जी के प्रति समर्पित था। सरकारी नौकरी के कारण शेवड़े जी के पिताजी खुल कर गांधीजी के विचारों को नहीं अपना सकते थे, पर वे बड़े ही राष्ट्रवादी थे। शेवडे जी की माताजी भी गांधी जी की भक्त थी। शेवड़े जी के ज्येष्ठ बन्धु रामकृष्ण जी ने सन् १९२०-२१ में गांधी जी के नेतृत्व में चलाये गये असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लिया था। शेवड़े जी की पत्नी श्रीमती यमुना जी भी गांधी तथा गांधीवाद से प्रभावित थी, जिसने राष्ट्र-प्रेम की अक्षय पूँजी विरासत में पायी थी।

अनन्त जी के मन में बचपन से ही गांधी जी के प्रति अपार श्रद्धा थी। बचपन में शेवड़े जी ने जब गांधीजी के प्रथम दर्शन किये थे, तब उन्हें गांधी जी से उनके गले की माला प्राप्त हुई थी। शेवड़े जी ने बड़े अभिमान से वह माला जतन की थी। ऐसे ही अनेक संस्कारों ने अनन्त जी को गांधी जी से अनन्य भक्ति की मीठी श्रृंखला में बाँध दिया था।

कॉलेज में प्रवेश करने के बाद अनन्त जी ने जब गांधी-साहित्य पढ़ा, तो उनके मन में गांधी-दर्शन से भी आस्था निर्माण हो गई। यह वैचारिक निष्ठा इतनी गहरी थी कि उन्होंने आजीवन उसका निर्वाह किया। शेवड़े जी का अटूट विश्वास था कि गांधी-दर्शन में भारत एवं विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान पाने की क्षमता है। उनके दो प्रसिद्ध उपन्यासों - 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में इस प्रबल निष्ठा के बड़े सजीव एवं प्रभावशाली संस्कार दिखाई देते हैं। अन्य उपन्यासो में भी उन्होंने गांधी जी के हृदय-परिवर्तन आदि विचारों का सुन्दर प्रतिपादन किया है।

सन् १९३० तथा १९४२ के आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया था। इसी सिलसिले में उन्हें जेल भी जाना पड़ा था। जेल में विनोबा जी, काकासाहब कालेलकर, किशोरभाई मशरूवाला जैसे श्रेष्ठ व्यक्तियों से उनकी भेंट हो गयी। विनोबा जी में वे गांधी जी की प्रतिछाया देखा करते थे। इसी काल में ही शेवड़े जी गांधी-दर्शन के विभिन्न पहलुओं से अवगत हुये। गांधी जी के जीवन-दर्शन के प्रति उनकी अटल निष्ठा ने दीपस्तंभ की तरह उन्हें

हमेशा मार्ग दिखाया।

गांधी जी के प्रति शेवड़े जी की श्रद्धा दिनों दिन बढ़ती गयी। गांधी जी के सत्य, अहिंसा और असहकार पर उनका पूरा-पूरा विश्वास था। गांधी जी के विचारों से ही हमें स्वतंत्रता मिलेगी, ऐसा उन्हें विश्वास था । शेवड़े जी कहते थे-

> "हमें गांधी जी के विचारों से ही स्वतंत्रता मिलेगी। देख लेना। ऐसी परिस्थिति पैदा होगी कि अंग्रेजों को हमें आजादी देने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। हम अपनी जिन्दगी में ही अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र देख लेंगे। वह समय भी अब बहुत दूर नहीं।"८

इस आशावाद के पीछे गांधी जी के प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा ही परिलक्षित होती है, जिसे 'ज्वालामुखी' उपन्यास में यथार्थ रूप में चित्रित किया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में भी वे गांधी जी के सिद्धान्तों से ही चिपके रहे, जबकि पूरे देश में अगांधीत्त्व फैल चुका था। इसका यथार्थ चित्रण 'भग्नमन्दिर' उपन्यास में हुआ है।

'स्वाध्याय मंजिरी' शीर्षक के अंतर्गत शेवड़े जी हर रोज डायरी लिखते थे। उसके हर पन्ने पर उन पर होनेवाला गांधी जी का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। साथ ही, सत्य तथा ईश्वर में अटल श्रद्धा, एक अच्छा विद्यार्थी, एक अच्छा इन्सान बनने की व्याकुलता। ९

सन् १९३० से ही उन्होंने खादी पहनना प्रारम्भ किया था। विवाह के समय भी उन्होंने खादी के ही कपड़े परिधान किये थे। शेवड़े जी कभी भी मद्यपान तथा मांस-भक्षण नहीं करते थे। गांधी जी के प्रभाव के फलस्वरूप वे अपनी गलतियों का हमेशा स्वीकार करते थे। स्त्री के प्रति देखने का उनका दृष्टिकोण विशाल एवं उदार था, जो उनके द्वारा निर्मित सभी स्त्री-व्यक्ति-रेखाओं से स्पष्ट हो जाता है। ईश्वर में उनका पूरा-पूरा विश्वास था। सुख के क्षणो में भी वे ईश्वर को नहीं भूलते थे। १० गांधी जी के हृदय-परिवर्तन के सिद्धान्त पर भी उनका अटल विश्वास था। शेवड़े जी हमेशा आंतरजातीय विवाह का समर्थन करते थे। ११ पूरा 'ईसाईबाला' उपन्यास इसी पर आधारित है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी शेवड़े जी गांधी जी के विचारों से प्रभावित थे। गांधीजी ने जिस 'ट्रस्टीशिप' की बात कही थी, उसे उन्होंने प्रत्यक्ष में लाने का प्रयास किया था। उनके हिन्दी-प्रेम के मूल में भी गांधी जी की प्रेरणा काम कर रही थी। गांधी तथा गांधीवाद के

प्रति निष्ठा का यह पहलू उनके व्यक्तित्व का श्रेष्ठतम पहलू है, क्योंकि अन्य सभी छोटे-बड़े पहलू अन्ततः इसी में आकर मिल जाते हैं। साहित्यकार, पत्रकार, राष्ट्रभाषा-प्रेमी तथा स्वतंत्रता-सेनानी आदि विभिन्न पहलुओं के मूल में गांधीवाद रहा है।

१.२.१०. भारतीय संस्कृति के प्रति असीम आस्था -

शेवड़े जी भारतीय संस्कृति तथा दर्शन में असीम आस्था रखते थे। गांधी जी में भारतीय संस्कृति के उदात्त और श्रेष्ठ तत्त्वों का समाहार हुआ है, ऐसा उनका विश्वास था। शायद इसी कारण शेवड़े जी गांधीजी के प्रति अत्यधिक आकर्षित हुये होंगे। भारतीय दर्शन विश्व की समस्याओं के समाधान, विश्व-शान्ति की स्थापना तथा पृथ्वी पर राम-राज्य के अवतरण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, ऐसी उनकी धारणा थी। एक स्थान पर शेवड़े जी ने लिखा है-

> "भारतीय संस्कृति के मूलभूत मूल्यों के प्रति मुझे घोर आस्था है और मेरा दृढ विश्वास है कि उन में ऐसे चिरन्तन तत्त्व हैं, जो विश्व की समस्याओं का समाधान कर सकते हैं और पृथ्वी पर ईश्वर का साम्राज्य उतारने की क्षमता रखते हैं।"१२

अतः शेवड़े जी का मन भारतीय संस्कृति के प्रति असीम आस्था से ओत-प्रोत था।

१.२.११. मानवतावाद -

शेवड़े जी मानवतावादी कलाकार थे। उनका यह मानवतावाद कवीन्द्र रवीन्द्र, महात्मा गांधी तथा प्रेमचन्द जी का मानवतावाद है। शेवड़े जी के सभी उपन्यास भिन्न-भिन्न कथावस्तुओं को लेकर चलते हैं, पर उन सब में बुनियादी बात है - मानव का चित्रण। उनका यह मानव किसी वर्ग-विशेष में नहीं बँधता, न तथाकथित शोषकों में, न शोषितों में। शेवड़े जी के अनुसार, मानव अपने भीतर बसने वाले दानवत्व से देवत्व की ओर जाने की कोशिश करता है, और यह प्रयत्न किसी एक वर्ग मात्र की विरासत नहीं है, समूचे मानव मात्र की है। प्रत्येक मानव में देवत्व और दानवत्व का वास रहता है, उसका कम-अधिक होना सर्वथा व्यक्ति तथा उसके संस्कारों पर अवलम्बित रहता है। शेवड़े जी से यह पूछने पर कि वह किन उद्देश्यों, समस्याओं और विचारधाराओं को अपने साहित्य में अभिव्यक्त करते हैं, उन्होंने उत्तर दिया था -

> "मानव की महानता और भव्यता में मेरा चरम विश्वास है।...

मानव में देवत्व और दानवत्व साथ ही साथ रहता है। उसका सतत् प्रयत्न रहता है कि वह दानवत्व से देवत्व की ओर बढ़े और अपने भीतर बसनेवाली अशुभ प्रवृत्तियों को जीत कर शुभ की ओर अग्रसर हो। मेरा प्रयत्न यही रहता है कि मानव के भीतर बसने वाली मानवता का यथासम्भव सही और कलापूर्ण चित्रण कर सकूँ। जो समस्याएँ व्यक्ति, समाज, देश या मानवता के स्वास्थ्य, सुख और मांगल्य की ओर इंगित करती हैं, उन में मुझे विशेष दिलचस्पी हैं।" १३

मानव-जाति के कल्याण के लिए शेवड़े जी गांधी जी के समान विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के पक्षपाती थे। भारत में इन दो महान शक्तियों के प्रतीक के रूप में वह नेहरू और विनोबा जी को मानते थे, जो गांधी जी के उत्तराधिकारी थें- एक राजनीतिक तो दूसरे आध्यात्मिक क्षेत्र में। गांधी जी की विश्व की एकता की कल्पना में शेवड़े जी का पूरा-पूरा विश्वास था। वह भी मानते थे कि जब तक हम देश, वर्ण, धर्म आदि के कटघरे से बाहर नहीं निकल सकतें, तब तक हमारा विकास असम्भव है। इसी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के विचारों की अभिव्यक्ति शेवड़े जी के ' अमृतकुम्भ' उपन्यास में हुई है। मानव की जिजीविषा में आपका विश्वास था तथा उसकी दुर्बलताओं के प्रति आपके मन में अपार सहानुभूति थी। बाँकेबिहारी भटनागर जी लिखते हैं -

" शेवड़े जी का साहित्य पढिए, आप ऊँचे उठे बिना नहीं रहेंगे। जीवन का ऐसा कोई मूल्य नहीं, जिस ने निर्धारित धरातल से नीचे उतर कर उन की सराहना पाई हो। फिर भी मानव की दुर्बलता के प्रति उन के मन में अपार सहानुभूति हैं - ऐसी सहानुभूति जो उसे निचोड़ कर उस के मैल को धो डाले, तपा कर उसे कुन्दन बना दे।" १४

इससे स्पष्ट है कि शेवड़े जी के मानवतावाद पर गांधी जी की स्पष्ट छाप है।

१.२.१२. सम्मान एवं पुरस्कार -

सफल साहित्यिक, निर्भीक पत्रकार, विश्वविख्यात चिन्तक, कुशल संगठक तथा राष्ट्रभाषा-प्रेमी एवं प्रचारक शेवड़े जी को अपने जीवन में अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए। इन विभिन्न सम्मानों एवं पुरस्कारों ने शेवड़े जी की जीवन-उपलब्धियों को गौरवान्वित

ही किया है।

उत्तर प्रदेश शासन ने इनके 'ज्वालामुखी', 'भग्नमन्दिर' तथा 'कोरा कागज' इन तीन उपन्यासों को पुरस्कृत किया था। इस के अलावा बरार लिटररी एकेडमी द्वारा 'ईसाईबाला', मध्य प्रदेश शासन साहित्य-परिषद व्दारा 'मृगजल' तथा भारत सरकार द्वारा 'इन्द्रधनुष' उपन्यास पुरस्कृत हुये थे। इन पुरस्कारों से इनके साहित्यकार की तेजस्विता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

भारतीय संस्कृति एवं भारत की भावनात्मक एकता के पोषक साहित्य के सर्जक और हिन्दी को राष्ट्रीय तथा सामाजिक संस्कृति की वाहक भाषा बनाने वाले विद्वानों को प्रशस्ति ताम्रपत्र तथा १५०१ रूपयों के रूप में 'महात्मा गांधी पुरस्कार' बहाल किया जाता है। शेवड़े जी को यह पुरस्कार सन् १९३१ में, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर से तिनसुकिया में सम्पन्न समिति-सम्मेलन में बहाल किया गया था। सन् १९६६ में, शेवड़े जी के साहित्यिक योगदान, स्वतंत्रता सेनानी, सफल पत्रकार तथा हिन्दी के ज्येष्ठ प्रचारक होने के उपलक्ष्य में विभिन्न संस्थाओं की ओर से 'अभिनन्दन समारोह' आयोजित किया था तथा भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसेन के द्वारा रजतपत्र देकर शेवड़े जी को सम्मानित किया था। इसी समय 'शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति' शीर्षक अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन किया था। इसी वर्ष व्हेटिकन सिटी के पोप द्वारा मानवता की सेवा के सम्मान में रोम में आयोजित एक विशेष समारोह में शेवड़े जी को 'पेपल मेडल' प्रदान किया था। सन् १९७४ में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री. वी.वी. गिरी द्वारा शेवड़े जी को 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया था। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का कुशल आयोजन कर हिन्दी को 'विश्वभाषा' बनाने की सर्वोच्च सेवा के लिए शेवड़े जी को 'राजर्षि टण्डन स्वर्णपदक' प्रदान किया था। सन् १९७५ में यह पदक उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से दिया गया था।

इन विभिन्न पुरस्कारों एवं सम्मानों ने शेवड़े जी के संघर्षमय जीवन में शीतलता प्रदान की थी। यमुना जी तो इसे 'किसी जबर्दस्त प्रहार के बाद पीठ पर फेरा गया भगवान का ममता-भरा स्पर्श ' ही मानती है। १५ पुरस्कारों की यह सुदीर्घ श्रृंखला शेवड़े जी के विशिष्ट व्यक्तित्व की प्रामाणिक पहचान है।

१.२.१३. देहावसान -

शेवड़े जी का देहावसान हृदयगति रूक जाने से १० जनवरी १९७९ की रात में कलकत्ता में हुआ। उस समय वे इण्डियन एण्ड ईस्टर्न न्यूज पेपर सोसायटी की बैठक में उपस्थित रहने हेतु कलकत्ता गये थे। शेवड़े जी अडसठ वर्ष के थे। उनके निधन से एक कर्मठ व्यक्तित्व पंचमहाभूतों में लीन हुआ। इस दुर्दैवी आघात से यमुना जी सचमुच अनाथ बन गयी। शेवड़े जी राष्ट्रवादी थे। गांधीवाद को उन्होंने अपने जीवन का आदर्श बनाया था। पत्रकारिता, साहित्य जैसे सभी क्षेत्रों में वे अपने बने-बनाये आदर्शों पर दृढ रहे। इसी कारण उनका जीवन दीपस्तंभ के समान पथ-दर्शक सिद्ध होता है। लवटे जी लिखते हैं-

> "शेवड़े जी के देहावसान से हिन्दी साहित्य, भाषा एवं संस्कृति की ऐसी हानि हुई है, जिसकी क्षतिपूर्ति असम्भव है।"[१६]

सचमुच, शेवड़े जी का जीवन हर भारतीय के लिए संस्मरणीय है।

१.३. अनन्त गोपाल शेवड़े : कृतित्व -

अनन्त गोपाल शेवड़े आदर्शोन्मुख यथार्थवादी साहित्यकार हैं। आपके लेखन पर मोपासा, चेखव, प्रेमचन्द, खाण्डेकर जैसे साहित्यकारों के विचारों का स्पष्ट प्रभाव है। गांधी जी के व्यक्तित्व तथा विचारों का भी आप पर जबर्दस्त प्रभाव रहा। फलस्वरूप आपकी रचनाओं में गांधीवाद, मानवतावाद, नारी-कल्याण आदि बातों का समर्थन मिलता है। साहित्य में आपने 'सत्यं, शिवं तथा सुन्दरं' का आदर्श प्रस्थापित किया है तथा मानव को सर्वोपरि मानते हुये उसके सदाचार की पूजा की है।

शेवड़े जी की मौलिक हिन्दी साहित्य-सम्पदा पर विचार करने से पहले हिन्दी साहित्य में उनके आविर्भाव तथा तत्कालीन परिस्थितियों का संक्षिप्त विवेचन करना अप्रासंगिक न होगा। कोई भी साहित्यकार युगीन परिस्थितियों से अछूता नहीं रह सकता है। इतना ही नहीं, तो साहित्यकार को लेखन की प्रेरणा युगीन परिस्थितियों से ही प्राप्त होती है। शेवड़े जी के बारे में भी यही हुआ था। उनके साहित्य-विषयक स्वस्थ दृष्टिकोण तथा उनकी साहित्यिक मान्यताओं की पृष्ठभूमि में उनके हिन्दी साहित्य में आविर्भाव कालीन परिस्थितियों का बड़ा हाथ है। युगीन परिस्थितियों ने ही उन्हें लेखन की प्रेरणा दी थी तथा गांधीवाद के प्रति अडिग आस्था निर्माण की थी।

१.३.१. हिन्दी साहित्य में शेवड़े जी का आविर्भाव तथा तत्कालीन परिस्थितियाँ -

हिन्दी साहित्य में शेवड़े जी का आविर्भाव अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण घटना है। लिखने की वृत्ति उनमें बचपन से ही विद्यमान थी। नित्य पठन-पाठन की आदतों ने उन्हें लेखन की प्रेरणा दी थी। चौदह वर्ष की अवस्था से ही शेवड़े जी निरन्तर लिखते आ रहे थे। इसवी सन् १९२५ में शेवड़े जी ने एक लेख लिखा था, जिसमें उन्होंने सतपुड़ा की पर्वतीय सुषमा का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया था। शेवड़े जी के प्रकृति-प्रेम की ओर इंगित करते हुए श्री. विनय मोहन शर्मा जी ने ठीक ही लिखा है-

> "प्रकृति की सौन्दर्य-राशि से आत्म-विभोर होने वाला यह लेखक, उसे एक जीवन्त शक्ति मानता है, मैत्री, सांत्वना और धैर्य देने वाली ममतामयी चैतन्य-शक्ति मानता है। "१७

शेवड़े जी का प्रथम लेख जब 'बालसखा' में प्रकाशित हुआ, तब वे मचल उठे। इस प्रकाशन से वे प्रोत्साहित हुये और नित्य लिखने लगे। सन् १९२८ में, जब शेवड़े जी खण्डवा में रहते थे, उनका परिचय हिन्दी के सुविख्यात कवि पं. माखनलाल चतुर्वेदी जी से हुआ। उनके प्रोत्साहन तथा निकट सम्पर्क से शेवड़े जी का साहित्यिक आश्वस्त हुआ। उन्हीं की प्रेरणा से शेवड़े जी ने 'कर्मवीर' में लिखना शुरू किया। इसी समय बच्चों की एक पत्रिका 'शिशु' में भी उनका लेखन प्रकाशित होता था।

शेवड़े जी इन दिनों काफी पढ़ते थे। मोपासा,चेखव, प्रेमचन्द, खाण्डेकर आदि कथाकारों की कथाओं से प्रभावित होकर अपने अनुभवों को स्वर दिलाने के हेतु शेवड़े जी छोटी-छोटी कथाएं लिखने लगे। 'प्रेस रिपोर्टर', 'साईकिल नंबर' जैसी कहानियाँ इन्हीं दिनों की उपज हैं। 'संदुक का मालिक' उस समय की बहुचर्चित कहानी है, जो प्रेमचन्द द्वारा सम्पादित 'हंस' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। प्रेमचन्द जी ने इस कहानी के लिए पाँच रूपये का पुरस्कार दिया था और लिखा था -

> "लिखने का तरीका अच्छा है। लिखते जाइए।"१८

प्रेमचन्द जैसे कथा-सम्राट का प्रशस्तिपत्र पाकर शेवड़े जी ने नित्य लिखने का संकल्प किया। इसी समय शेवड़े जी उपन्यास की ओर मुड़े। सन् १९३०-३१ में उन्होने 'ईसाईबाला' नामक प्रथम उपन्यास की रचना की। इसी प्रकार शेवड़े जी निरन्तर लिखते रहे और हिन्दी साहित्य

में उन्होंने एक नवीन कीर्तिमान स्थापित किया।

हिन्दी साहित्य में शेवड़े जी का आविर्भाव बीसवी शताब्दी के तीसरे दशक में हुआ। इस काल में भारत में अंग्रेजी शासन पूरी तरह प्रतिष्ठित हुआ था। देशी व्यवसाय तथा उद्योग-धन्दों को नष्ट कर अंग्रेजों ने हमारी सामाजिक और आर्थिक उन्नति में महान व्याघात उपस्थित कर दिया था। देश की सामाजिक स्थिति बहुत ही शोचनीय थी। अन्धविश्वासों के साथ ही बाल-विवाह, सती-प्रथा, दहेज-प्रथा आदि कारणों से नारी की स्थिति अपमाननापूर्ण थी। कुल मिला कर तत्कालीन भारत राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से अंग्रेजों का गुलाम बना हुआ था।

इन विभिन्न परिस्थितियों की प्रतिक्रियास्वरूप भारत में एक साथ सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक क्रान्ति ने जन्म लिया और भारतीयों में जागरण का शंखनाद गूंज उठा। इस जागरण-समारोह के उद्घाटक थे राजा राममोहन राय तथा समापनकर्ता थे महात्मा गांधी।

सन् १९२० में कॉंग्रेस की बागडोर गांधी जी ने सँभाली। इनका दृष्टिकोण समन्वयात्मक था। इन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों को सम्मिलित कर असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया, जिसमें विदेशी वस्त्रों, सरकारी नौकरियों, कौन्सिलों, न्यायालयों, स्कूलों, कॉलेजों और उपाधियों का बहिष्कार कर दिया गया। गांधी जी ने अपने आचार एवं विचारों से सामान्य जनता को राजनीति में सक्रिय सहयोग लेने के लिए बाध्य किया। गांधी जी ने अपने आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विचारों के माध्यम से अपना मानवतावादी जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया। अपने चिन्तन के मूल आधारों (सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह) के द्वारा उन्होंने सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना की। समाज के आमूल परिवर्तन के लिए गांधी जी ने अठारह सूत्रों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसमें सांप्रदायिक एकता, विधवा विवाह, आंतरजातीय विवाह तथा अस्पृश्यता-निवारण को अत्यावश्यक समझा था। आर्थिक समता के हेतु वे विदेशी मशीनों का विरोध तथा देशी चरखा-संघ का स्वीकार करते थे। सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह को राजनीतिक स्तर पर प्रस्तुत करने के लिए गांधी जी ने असहयोग तथा सविनय आज्ञाभंग के मार्ग का अवलम्ब किया। उनका प्रमुख उद्देश्य अहिंसा के मार्ग से स्वतंत्रता की प्राप्ति करना था। इसी काल मे अनेक क्रान्तिकारी संघटनाओं द्वारा भी स्वतंत्रता-प्राप्ति के प्रयत्न किये जा रहे थे।

बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध गांधीवाद का युग माना जाता है। इस काल में भारतवर्ष का शायद ही कोई नागरिक होगा, जो महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित न हुआ हो। गांधी जी ने राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में राष्ट्रवाद, अहिंसा, सत्य तथा मानवतावाद जैसे मूल्यों की स्थापना की थी। सन् १९२० के बाद जो युवा पीढी उभरी, उनके लिए गांधी जी नेता थे। सन् १९३० का काल गांधी जी द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन का काल था। सत्याग्रह, जुलूस, प्रभात-फेरी से सारा देश गूंज रहा था। इन सारी बातों का प्रभाव शेवड़े जी के व्यक्तित्व पर पड़ना स्वाभाविक ही था। फलतः घर की विपरीत परिस्थितियों की परवाह किये बगैर शेवड़े जी आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। जन-जागृति, भूमिगत कार्य का आयोजन, ग्रामोद्धार, अछूतोद्धार जैसे कार्यों में वे सक्रिय रहे। गांधी जी का उन पर जबर्दस्त प्रभाव था। गांधी जी के व्यक्तित्व एवं विचारों से शेवड़े जी भली-भाँति प्रभावित थे। व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति ही तो साहित्य है। जिन संस्कारों, विचारों की छाप किसी के व्यक्तित्व पर दिखाई देती है, उनकी अभिव्यक्ति उसके साहित्य में होना स्वाभाविक है। शेवड़े जी का समस्त कृतित्व उनके व्यक्तित्व की ही व्याख्या करता है। शेवड़े जी के व्यक्तित्व पर गांधी जी का जबर्दस्त प्रभाव था। इस कारण उनका साहित्य भी गांधीवादी विचारों का संवाहक बना है।

१.३.२. शेवड़े जी की मौलिक हिन्दी-साहित्य-सम्पदा -

हिन्दी साहित्य में शेवड़े जी ने ग्यारह उपन्यास, तीन कहानी-संग्रह, दो निबन्ध-संग्रह तथा एक यात्रा-वर्णन-संग्रह आदि का योगदान दिया है। मौलिक लेखन के अतिरिक्त अनुवाद के क्षेत्र में भी शेवड़े जी ने सराहनीय कार्य किया है। इसके अलावा उन्होंने अंग्रेजी में भी कई उपन्यास लिखे हैं तथा दो समाचार पत्रों का सृजन भी किया है। इस प्रकार उन्होंने अपने कृतित्व को बहुआयामी सिद्ध किया है। यहां पर केवल उनके मौलिक हिन्दी-साहित्य पर ही विचार किया जायेगा।

१.३.२.१. उपन्यास - साहित्य -

१) 'ईसाईबाला' (१९३२) -

यह शेवड़े जी का सर्वप्रथम उपन्यास है। इस में एक ईसाई युवती और एक आदर्शवादी हिन्दू युवक के माध्यम से उपन्यासकार ने आंतरजातीय विवाह का समर्थन किया

है। प्रस्तुत उपन्यास सुखान्त है। श्री. विनयमोहन शर्मा जी ने इसे 'एक रूमानी, मीठी-सी कहानी' कहा है। १९ इसका गुजराती अनुवाद 'स्वप्न सिद्धि' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास के लिए शेवड़े जी को एकेडमी की ओर से पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

२) ' निशागीत' (१९४८) -

यह शेवड़े जी का द्वितीय उपन्यास है। यह एक स्वस्थ और सुरूचिपूर्ण प्रेम-कहानी है, जिसमें एक अन्धे डॉक्टर और वयस्क नर्स के उदात्त प्रेम का चित्रण है। इस प्रेम-कहानी का आशय यह है कि प्रेम वास्तव में आत्मा और हृदय की वस्तु है, जिसका शारीरिक सौंदर्य, वर्ण, आयु आदि से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। निर्मल प्रेम, समर्पण तथा सेवा का आदर्श देने वाला यह उपन्यास अनेक समकालीन सामाजिक समस्याओं को स्वर देता है। जनसेवी डॉ. मधुसूदन, परिचारिका सुशीला और अध्यापिका पद्मा इन तीन पात्रों के मानसिक उतार-चढाव में कथा अंकुरित और पल्लवित होती है। इस में स्त्री-पुरूष के परस्पर प्रेम की वास्तविकता का बड़ा ही मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास पर अपनी सम्मति प्रकट करते हुए उदयशंकर भट्ट कहते हैं -

> " यह शुरू से आखिर तक स्पष्ट तथा हृदयहारी है। रस, रोचकता, गठित शैली के कारण उपन्यास की वस्तु अत्यंत सुंदर तथा भव्य हो उठी है। उपन्यास शेवड़े जी के कृतित्व का अभिनव सौंदर्य है।" २०

यथार्थ के धरातल पर आदर्श प्रेम का चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है।

३) 'मृगजल' (१९४९) -

'मृगजल' एक अत्यंत कलापूर्ण रोचक उपन्यास है। यह एक चित्रकार की जीवन-गाथा है, जो जीवन और कला के मध्य समन्वय स्थापित करने की सतत् साधना करता है। इस उपन्यास में नारी-स्वभाव के तीन नमूने देखने को मिलते हैं। इन तीन विभिन्न नारी-पात्रों ने भावुक कलाकार के जीवन को जड़ से आन्दोलित किया है। उनके भावात्मक आघात-प्रत्याघात के संघर्षों में से उपन्यासकार ने यह प्रश्न कुशलता से उपस्थित किए हैं - कला का जीवन से क्या सम्बन्ध है ? जीवन में प्रेम का क्या स्थान है ? क्या कला जीवन से विमुख हो कर शाश्वत और चिरंतन शक्ति पा सकती है ? कला, कला के लिए है या जीवन के लिए ?

इन प्रश्नों का उहापोह इस कलापूर्ण उपन्यास में बड़े रोचक ढंग से किया है। आश्चर्य नहीं, जो मध्य प्रदेश शासन साहित्य-परिषद की ओर से यह उपन्यास पुरस्कृत हुआ।

४) 'पूर्णिमा' (१९५०) -

इसमें पूर्णिमा नामक एक आधुनिक कॉलेज-छात्रा की मनोवैज्ञानिक कहानी है, जो स्वयं अपने मन को नहीं समझ पाती, पर जिसे परिस्थितियों की ठोकर खाकर यथार्थ का ज्ञान होता है। प्रस्तुत उपन्यास शैक्षिक जगत की पृष्ठभूमि पर विकसित हुआ है। नायिका पूर्णिमा का चित्रण मानसिक धरातल पर हुआ है। इसमें शेवड़े जी ने पाप, पुण्य, पैसा, प्रतिष्ठा, प्रेम जैसी बातों पर अपना मन्तव्य व्यक्त कर हमारे समाज-जीवन की तीखी समीक्षा की है। समाज के पाखण्ड पर उपन्यासकार द्वारा किया गया प्रहार ध्यातव्य है। 'पूर्णिमा' में शेवड़े जी का उदार समाज-सुधारक प्रतिबिम्बित हुआ है। गलती को अपराध की गम्भीरता से देखने की हमारी वृत्ति का वे विरोध करते हैं। नारी के प्रति उदारता से तथा प्रगतिशिल नजरिये से देखने की युग की आवश्यकता को उपन्यासकार ने जिस कौशल से समझाया है, वह विचारणीय है।

५) 'ज्वालामुखी' (१९५६) -

स्वातंत्र्योत्तर कालीन राजनीतिक हिन्दी उपन्यासों में 'ज्वालामुखी' एक उल्लेखनीय उपन्यास है। सन् १९४२ की अगस्त-क्रान्ति उपन्यास का वातावरण है। इसे लेखक की आपबीती भी कहा जा सकता है। इसमें भारतीय स्वातंत्र्य की प्रसव-वेदना का चित्रण है। आजादी के आन्दोलन में अपने जीवन को देश के लिए समर्पित करने वाले स्वतंत्रता-सेनानियों की यह कथा है। तभी तो उपन्यासकार ने इसे शहिदों को अर्पित किया है। उपन्यास का विचार पक्ष उसे गांधीवादी जीवनादर्श की ओर ले जाता है। 'ज्वालामुखी' के सम्बन्ध में डॉ.रामचरण महेन्द्र जी ने लिखा है -

> "भारतीय संस्कृति एवं जीवन-प्रणाली का दिव्य स्वरूप हमें इस उपन्यास में दिखाई देता है।"[२१]

'ज्वालामुखी' का उद्देश्य महान है। उपन्यासकार के ही शब्दों में -

> "स्वतंत्रता-संग्राम के लिए हमारे देश को क्या-क्या भोगना पड़ा, इसका सजीव एवं हृदयस्पर्शी अंकन इस उपन्यास में है, ताकि

आने वाली पीढ़ियाँ जान सकें कि जिस स्वतंत्रता का हम उपभोग कर रहे हैं, उस की हमें क्या कीमत चुकानी पड़ी और इसलिए उसे टिकाने के लिए तथा समृद्ध और मजबूत बनाने के लिए हमें किस प्रकार की जिम्मेदारी की भावना बरतनी चाहिए।" **२२**

'ज्वालामुखी' का सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इसका अंग्रेजी संस्करण 'दि वाल्कनो' के नाम से स्वयं शेवड़े जी ने तैयार किया था, जो न्यूयार्क (अमरिका) से प्रकाशित हुआ था। इस कृति को उत्तर प्रदेश सरकार ने १९५६ की श्रेष्ठ रचना घोषित कर पुरस्कृत किया था। नेत्रहीनों के लिए ब्रेयल लिपि में भी इसका संस्करण निकल चुका है।

६) 'मंगला' (१९५७) –

यह एक अंधे संगीतज्ञ पं. सदानन्द तथा उसकी पत्नी मंगला की रोचक, मनोरंजक तथा मर्मस्पर्शी कहानी है। प्रस्तुत उपन्यास सुखान्त है। सम्पूर्ण उपन्यास प्रेम, संगीत और जीवन पर आधारित है। यह एक नेत्रहीन कलाकार की कलात्मक कथा है, जिसे 'नेत्रहीनों की गीता' माना जाता है। अंधों के लिए ब्रेयल लिपि में भी इसका संस्करण प्रकाशित हुआ था। इसके ब्रेयल लिपि में तीन तथा देवनागरी लिपि में नौ संस्करण प्रकाशित हुए हैं। यह इसकी सफलता का ही द्योतक है। 'मंगला' में कलाकार की जिन्दगी को स्वर देने के साथ-साथ नारी की व्यथा-वेदनाओं को प्रकट करने का भी प्रयास किया है।

नेत्रहीनों के प्रति शेवड़े जी के मन में एक विशेष करूणा का भाव नजर आता है, जो इस उपन्यास में अभिव्यक्त हुआ है। यमुना जी के संगीत-प्रेम का प्रभाव भी इस उपन्यास पर पड़ा है।

७) 'अधूरा सपना' (१९६०) –

शेवड़े जी ने इसे पहले 'परिक्रमा' शीर्षक से लिखा था, पर प्रकाशन के समय इसका शीर्षक बदल कर 'अधूरा सपना' रखा गया। मनुष्य अपनी जिंदगी में अनेक अधूरे सपनों को संजो कर रखता है। उनकी मधुर स्मृतियाँ उसका जीवनाधार बन जाती हैं। प्रस्तुत उपन्यास में मनुष्य की इस मनोवृत्ति का सुंदर दर्शन मिलता है। डॉ. रामचरण महेन्द्र जी के शब्दों में –

"स्त्री और पुरूष के प्रेम का अत्यंत भव्य और उदात्त स्वरूप

हमें इस उपन्यास में दिखाई देता है।" २३

८) 'भग्नमन्दिर' (१९६०) -

यह स्वातंत्र्योत्तर भारत की पृष्ठभूमि पर लिखा एक राजनीतिक उपन्यास है। स्वातंत्र्योत्तर काल में त्याग, देशभक्ति, नैतिकता, सच्चाई जैसे जीवन-मूल्यों का ऱ्हास हुआ। हमारे राजनीतिज्ञ मस्त होकर अपने उल्लू सीधे करने में मग्न रहे। यह सब देख कर स्वतंत्रता के लिए जान हथेली पर लेकर लड़ने वालो को देश एक भग्नमन्दिर जैसा विरूप नजर आने लगा। शेवड़े जी ने भारतवर्ष में आये इस राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तन को करीब से देखा था और इन सब से उनका समाजसेवक, साहित्यिक व्यथित होना स्वाभाविक था। हृदय में इससे जो टीस जगी, उससे ही 'भग्नमन्दिर' बना। डॉ. ब्रजभूषण सिंह के शब्दों में -

> " 'भग्नमन्दिर' एक प्रदेश के ऐसे मुख्यमंत्री के प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार की कहानी है, जो स्वतंत्रता के पूर्व त्यागी, राष्ट्रभक्त और कर्मठ सेनानी थे, पर वही सत्ता-प्राप्ति के उपरान्त भ्रष्टाचार के गर्त में फँस जाते हैं। " २४

शेवड़े जी ने अपने सारे निरीक्षणों को संजो कर 'भग्नमन्दिर' को स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति का आलेख बना दिया है। डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी ने इसे 'समकालीन राजनीतिक जीवन की कॉमेंट्री' कहा है। २५ प्रस्तुत उपन्यास को उपन्यासकार की आपबीती भी माना जाता है, क्योंकि इसके नायक धनंजय पर शेवड़े जी के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है, तो गीता पर यमुना जी की। 'डस्क बिफोर डॅन' नाम से शेवड़े जी ने इस उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद किया है।

९) 'इन्द्रधनुष' (१९६५) -

'इन्द्रधनुष' दाम्पत्य-जीवन के विभिन्न रंगों की दुनिया को चित्रित करने वाला एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें गृहस्थ-जीवन के विभिन्न पहलुओं के परिप्रेक्ष्य में स्त्री-पुरूष-सम्बन्ध, उससे उठने वाले संघर्ष आदि का चित्रण कर मानव की मनोवृत्तियों की व्याख्या करने का प्रयास किया है। दाम्पत्य-जीवन की समस्याओं के साथ ही साथ हमारे विश्वविद्यालयीन जीवन का भी इसमें सहज चित्रण हुआ है। 'भग्नमन्दिर' में राजनीतिक वातावरण के ऱ्हास का चित्रण है, तो 'इन्द्रधनुष' में शैक्षिक क्षेत्र की परिस्थितियों का निरूपण

कथा-प्रवाह के साथ अनायास ही हुआ है। डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी के शब्दों में -

" 'भग्नमन्दिर' राजनीतिक पतन एवं उच्छृंखलता की दास्तान है, जबकि 'इन्द्रधनुष' शैक्षिक जगत के चहुमुखी ऱ्हास की। " २६

१०) 'कोरा कागज' (१९७३) -

'कोरा कागज' प्रतीकात्मक शीर्षक है, जिसके माध्यम से लेखक ने अपने इस मन्तव्य को व्यक्त किया है कि लेखन के प्रति पूर्ण निष्ठा, तल्लीनता और समर्पण के बिना एक पंक्ति भी नहीं लिखी जा सकती, कागज कोरा ही रह जाता है। उपन्यास का नायक निरंजन जब-जब लेखन से अधिक जीवन के अन्य पक्षों को प्रमुखता देने लगता है, तब-तब उसका लेखन अवरूद्ध हो जाता है। लेखन-कार्य एक साधना है, त्याग है, तपस्या है। सुख-समृद्धि और वैभव से लेखन का तात्विक विरोध है। साहित्यकार की आत्मा को शेवड़े जी अपनी निजी अनुभूतियों से जानते थे। साहित्य उनके लिए आत्मा की पुकार है, जिसके सामने अमृत भी शायद फीका मालूम हो।

११) 'अमृतकुम्भ' (१९७७) -

उपन्यासकार शेवड़े जी की अंतिम औपन्यासिक कृति है - 'अमृतकुम्भ'। यह एक दर्शन से भरा उपन्यास है। मनुष्य अपनी उत्तरार्द्ध की जिंदगी में अन्तर्मुखी होकर कुछ हद तक आध्यात्मिक भी होता है। पूर्ववर्ती उपन्यास 'कोरा कागज' में निरंजन का भटकना और 'अमृतकुम्भ' में सत्यकाम एवं पालीन का विश्व-पर्यटन आध्यात्मिक समाधान से ही प्रेरित है। यह एक विचार-प्रधान सोद्देश्य रचना है। शेवड़े जी ने इसमें यंत्रयुग से निर्मित मूल्यहीनता, पश्चिम की अंधी नकल, भोगवाद जैसी बातों के परिप्रेक्ष्य में विज्ञान एवं अध्यात्म के संतुलन पर बल दिया है। स्पष्ट है, शेवड़े जी का गांधीवादी विचारक स्वातंत्र्योत्तर काल में आचार्य विनोबा के निकट सम्पर्क एवं प्रभाव से सर्वोदयी बना था। मानव-कल्याण के अंतिम लक्ष्य से प्रेरित सर्वोदयी दार्शनिकता से सम्पूर्ण उपन्यास भरा पड़ा है।

१.३.२.२. कथा-साहित्य -

१) 'संगम' (१९६२) -

'संगम' कहानी-संकलन लेखक-दम्पति का संयुक्त प्रयास है। इसमें शेवड़े जी की लिखी आठ कहानियों के अतिरिक्त उनकी पत्नी श्रीमती यमुना शेवड़े जी की लिखी आठ

कहानियाँ भी सम्मिलित की हैं। मराठी और हिन्दी के दो कथाकारों का यह संयुक्त प्रयास अपने आप में एक अनुठा प्रयास है। लेखक-दम्पति के जीवन में हिन्दी की साहित्य-सरिता और मराठी की रम्य वाणी का जो मिलन हुआ, 'संगम' उसी का प्रतीक है। यह संगम वास्तव में हिन्दी और मराठी कथा-प्रवाहों का संगम है। प्रस्तुत संकलन में दोनों कथाकारों ने एक-दूसरे के जो सुंदर रेखाचित्र खींचे है और अपनी आत्मीयता को प्रकट किया है, वह इस संकलन की एक और खासियत है।

२) 'संतरों की डाली' (१९६४) -

'संतरों की डाली' शेवड़े जी का द्वितीय कहानी-संकलन है। इसमें शेवड़े जी की लिखी पन्द्रह कहानियाँ संकलित है। इन कहानियों में उन्होंने गांभीर्य के स्थान पर स्वस्थ मनोरंजन का विशेष ध्यान रखा है, फिर भी किसी-न-किसी आदर्श की ओर संकेत अवश्य मिलता है।

३) 'अंधेरे से दोस्ती' -

'साथ-संगत' नामक यमुना जी की लिखी आत्मकथा में शेवड़े जी के 'अंधेरे से दोस्ती' नामक एक अन्य कथा-संग्रह का उल्लेख किया गया है।

शेवड़े जी की कहानी-कला की विशेषता है - कौतुहल एवं उसका आकस्मिक उद्घाटन। उनके कथाकार में कथा-शिल्पी की अपेक्षा समाजसुधारक प्रबल है। डॉ. इन्द्र पाल सिंह 'इन्द्र' जी ने शेवड़े जी की कहानियों के सम्बन्ध में ठीक ही लिखा है -

> "आधुनिक कहानी जो एक संवेदना जगाती है, जो हृदय में एक आन्दोलन उत्पन्न करती है और चिन्तन को एक दिशा देती है, उसका शेवड़े जी की कहानियों में अभाव है। "२७

१.३.२.३. निबन्ध-साहित्य -

१) 'तीसरी भूख' (१९५५) -

'तीसरी भूख' शेवड़े जी का पहला निबन्ध-संकलन है। इसमें उनके बारह ललित निबन्ध संकलित किये हैं। इनमें से आधे निबन्ध जेल में लिखे हैं और आधे बाहर। ये सभी निबन्ध 'सरिता', 'राष्ट्रभारती', 'मानवता' तथा 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन निबन्धों में रोचकता के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य का पुट भी विद्यमान

है। उनके हास्य-व्यंग्य में न सिर्फ हँसी की फुलझडियाँ होती हैं, अपितु उनमें मनन के लिए बाध्य कराने की शक्ति भी होती है इन निबन्धों में व्यावहारिक जीवन के लिए कुछ-न-कुछ सन्देश अवश्य मिलता है। इसमें लेखक ने जीवन के महान सत्य अत्यंत कलात्मकता से संजोये हैं।

२) 'जिन खोजा तिन पाईयाँ -

यह शेवड़े जी का दूसरा निबन्ध-संकलन है। इसमें नैतिक विषयों पर लिखे गये लघु-निबन्ध संकलित किये हैं। इन निबन्धों में शेवड़े जी की उपदेशात्मक वृत्ति दृष्टगत होती है।

अन्य साहित्य-विधाओं की तरह शेवड़े जी निबन्ध को भी जीवनवादी दृष्टि से देखते थे। विषय की दृष्टि से उनके निबन्धों में विविधता है। हास्य-व्यंग्य शैली में लिखे निबन्ध भी मार्मिक हैं। उनके निबन्धों की शक्ति उनमें निहित मननशीलता में है।

१.३.२.४. यात्रा-साहित्य -

१) 'दुनिया रंग रंगीली' -

शेवड़े जी को रूस, स्विजरलैण्ड, यूनान, फ्रान्स, अमरिका तथा जापान आदि विभिन्न देशों में यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। प्रस्तुत संकलन में उन्होंने विदेश-यात्राओं का वर्णन रोचकता के साथ किया है। लेखक ने विभिन्न देशों के सौंदर्य का वर्णन करते हुए वहां के निवासियों के आन्तरिक सौंदर्य की भी झाँकी कराई है तथा भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी ललक का भावात्मक रूप प्रस्तुत किया है। कहीं-कहीं वर्णन करते समय लेखक इतने रम गये हैं कि उसमें काव्य जैसी सरसता आ गई है।

शेवड़े जी ने ' फॉर बियांड दि सीज' नाम से अंग्रेजी में एक यात्रा-वर्णन लिखा है, जिसमें जर्मनी, इटली, अग्लैंड तथा फ्रान्स की यात्राओं का वर्णन है।

शेवड़े जी के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का अनुशीलन करने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उनका जीवन अंधेरे से प्रकाश की ओर यात्रा है। उन पर गांधी जी के व्यक्तित्व एवं विचारों का जबर्दस्त प्रभाव पड़ा है। इस प्रभाव की अभिव्यक्ति उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से की है। समस्त शेवड़े-साहित्य पर गांधीवाद का प्रभाव पड़ा है।

●उद्धरण-सूची -

१. 'शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति', बाँकेबिहारी भटनागर (संपादक), पृ.१६

२. वही, पृ.१३

३. 'संगम', श्रीमती यमुना शेवड़े, 'परिचय विभाग'
('अनन्त गोपाल शेवड़े और उनका साहित्य', डॉ.शं.ना.गुंजीकर, पृ.१२ से उद्धृत)

४. 'शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति', बाँकेबिहारी भटनागर (संपादक), पृ.४७

५. वही, पृ.७५

६. वही, पृ.११

७. वही, पृ.११

८. वही, पृ,३५

९. 'साथ-संगत', यमुना शेवड़े , ('हिन्दी अनुवाद), पृ.२०

१०. वही, पृ.१३१

११. वही, पृ.१६

१२. 'शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति', बाँकेबिहारी भटनागर (संपादक), पृ.७८

१३. वही, पृ.७१-७२

१४. वही, पृ.५०

१५. वही, पृ.३९

१६. 'शेवड़े : व्यक्तित्व एवं कृतित्व', डॉ. सुनीलकुमार लवटे, पृ.२६

१७. 'शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति', बाँकेबिहारी भटनागर (संपादक), पृ.५६

१८. वही, पृ.५७

१९. वही, पृ.५६

२०. 'शेवड़े : व्यक्तित्व एवं कृतित्व', डॉ. सुनीलकुमार लवटे, पृ.३९ से उद्धृत

२१. 'शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति', बाँकेबिहारी भटनागर (संपादक), पृ.६९

२२. वही, पृ.७६-७७

२३. वही, पृ.७१

२४. 'हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन',डॉ.ब्रजभूषण सिंह, पृ.३६१

२५. 'शेवड़े : व्यक्तित्व एवं कृतित्व', डॉ. सुनीलकुमार लवटे, पृ.४७

२६. वही, पृ.४८

२७. 'वर्तमान के दर्पण में हिन्दी साहित्य',डॉ.इन्द्र पाल सिंह 'इन्द्र', पृ.२१२